स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग
राँची विश्वविद्यालय ,राँची

संस्कृत विषय में पीएच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रबंध का रूप
(मानवीय संकाय)

“अभिराज राजेन्द्र मिश्र के काव्यों में मानवीय मूल्य : एक समीक्षात्मक अध्ययन ”

निर्देशिका

प्रो० अर्चना कुमारी दुबे
स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग,
राँची विश्वविद्यालय ,राँची

शोधार्थी

संचिता मन्ना
स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

“अभिराज राजेन्द्र मिश्र के काव्यों में मानवीय मूल्य :
एक समीक्षात्मक अध्ययन ”

प्रस्तावना

संस्कृत भाषा का साहित्य भारतीय वाङ्मय की अमूल्य निधि है। भारतीय लोकमानस, लोकधर्म, लोकवार्ता एवं शास्त्रीय ज्ञान का जितना भव्य इंद्रधनुषीय प्रतिबिम्ब संस्कृत काव्यों में परिव्याप्त है उतना कहीं और नहीं पाया जाता।

जीवन की सफलता का आधार वास्तव में मानवीय मूल्यों में निहित है। वास्तव में मूल्य की प्रक्रिया आज हम पूर्णतः स्वतन्त्र रहकर और अपने हित को सर्वोपरि रखकर प्राय: विकल्प चुना करते हैं, परंतु वास्तव में ऐसा नहीं होना चाहिए। हमारी प्राचीन समृद्ध सांस्कृतिक विरासत में मानवीय मूल्यों, सत्य, धर्म, सादगी, त्याग, दयाभाव, शालीनता, शांति, अहिंसा का समावेश था। इसीलिए प्राचीन समय में भारत को विश्व गुरु का दर्जा प्राप्त था।

मानवीय मूल्य का अर्थ-

मनुष्य जीवन पर्यन्त सीखता रहता है तथा उसके अनुभवों में निरन्तर अभिवृद्धि होती है- जैसे-जैसे मनुष्य अधिक सीखता जाता है वैसे वैसे वह और परिपक्व होता जाता है । वह ऐसे अनुभवों को भी प्राप्त करता है जो उसके व्यवहार को निर्देशित करते हैं। ये निर्देशन व्यक्ति के जीवन को दिशा प्रदान करते हैं तथा इन्हें ही मानवीय मूल्य कहा जाता है।

मानवीय मूल्यों की प्रकृति-

मूल्यों के अर्थ में तथा उनकी प्रकृति के संबन्ध में निम्नलिखित तथ्य प्राप्त होते हैं-

- मानवीय मूल्य मानव जीवन के लक्ष्यों से संबन्धित होते हैं।
- हमारा आचरण हमारे मूल्यों के द्वारा प्रेरित होता है।
- मूल्य हमारे प्रयासों को निर्देशित करते हैं । जो ठीक न्यायोचित और वांछित है, उसके संबन्ध में मूल्य भावनाओं, रुचिओं दृष्टिकोण तथा विचारों की प्राथमिकताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- मानवीय मूल्यों का अपना महत्त्व है। एक अच्छा व्यक्ति ही अच्छी चीजों की पहचान कर सकता है।
- मूल्य का निर्माण एवं संरक्षण मनुष्य का महत्त्वपूर्ण प्रयोजन है।
- परिपूर्णता, आत्मानुभूति, संतुष्टि, विकास, सत्य, निष्ठा आदि मूल्य के लक्षण हैं।

संस्कृत साहित्य विपुल और विशाल है, इसके महाकाव्य में जो नायक या नायिका है या जो सामाजिक परिस्थितियों हैं वह मानवीय मूल्यों को निर्धारित करते हैं और उसे समझ सकता है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहने के नाते उसका समाज पर कुछ ना कुछ कर्तव्य होता है। मनुष्य का समाज पर और समाज का मनुष्य पर प्रभाव पड़ता है।

ऐसे ही घटनाक्रम के प्रभाव में प्रोफ़ेसर अभिराज राजेन्द्र जी मिश्र जिन्हें वर्तमान में आधुनिक कालिदास कहा जाता है, उन्होंने संस्कृत साहित्य में बहुत सारे ग्रंथ लिखे हैं, जो वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए मानव व समाज पर पड़ने वाले प्रभावों का और वर्तमान परिस्थितियों के आधार पर किन-किन मानवीय मूल्यों का क्या प्रभाव है ? क्या अपेक्षा है ? क्या आवश्यकता है ? क्या उपयोगिता है ? इन सारी चीजों को ध्यान में रखते हुए उन्होंने बहुत सारे काव्यों की रचना की है, उनकी प्रमुख काव्य कुछ इस प्रकार से हैं-

क. महाकाव्य - जानकीजीवनम् , वामनावतरणम्

ख. खण्डकाव्य - आर्यान्योक्तिशतकम्, नवाष्टकमालिका, पराम्बाशतकम्, शताब्दीकाव्य, अभिराजसप्तशती आदि।

ग. नवगीतसंग्रह - वाग्वधूटी, मृद्वीका आदि।

घ. गलज्जलिका संग्रह - कनीनिका, मत्तवारणी आदि।

जब हम मानवीय मूल्य की चर्चा करते हैं तो यह मानवीय मूल्य है क्या ? जैसे व्यक्ति से व्यक्तित्व होता है वैसे मानवता से मानवीय मूल्य होता है। मानवीय मूल्य मानव का मूल आचरण और व्यवहार होता है। मानवीय मूल्य विभिन्न प्रकार के होते हैं-

मानवीय मूल्य के प्रकार- आध्यात्मिक मानवीय मूल्य, सामाजिक मानवीय मूल्य, नैतिक मानवीय मूल्य, भौतिक मानवीय मूल्य आदि।

शोध उद्देश्य:

1. मानवीय मूल्यों को परिभाषित करना।
2. मानवीय मूल्यों का समाज पर पड़ने वाले प्रभावों का ज्ञान प्राप्त करना।
3. नैतिक मूल्य का मानव जीवन में स्थान व मूल्य निर्धारण करना।
4. प्रोफ़ेसर अभिराज राजेन्द्र मिश्र के काव्यों में मानवीय मूल्यों का अन्वेषण एवं समीक्षण करना।

5. मानवीय जीवन में मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता सिद्ध करना।
6. मानवीय मूल्य के स्वरूप एवं प्रकारों का वर्णन करना।

शोध के स्रोत :-

- विभिन्न विश्वविद्यालय के पुस्तकालय व पत्रिकाएं।
- सेमिनार , संगोष्ठी व शोध पत्र।
- इंटरनेट के माध्यम से।

शोध प्रविधि

शोधकार्य के लिए पुस्तकावलोकन विधि का अनुसरण किया जाएगा। इस विषय से संबंधित “शोधकार्य जो अभी तक प्रकाशित हो चुके हैं या पांडुलिपि के रूप में विद्यमान है” का अध्ययन किया जाएगा। शोध के साक्षात्कार विधि का भी आश्रय लिया जाएगा। इसके लिए संबद्ध क्षेत्र के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वानों का मार्गदर्शन प्राप्त किया जाएगा।

शोध का विषय/महत्त्व

वर्तमान समय में समाज को एक अच्छे उपादेय और उद्दात मानवीय मूल्यों की जरूरत है। मैंने इसीलिए अपने शोध में विषय के रूप में संस्कृत कितने प्रकांड विद्वान और उनकी रचनाओं में मैंने मानवीय का अन्वेषण करने का प्रयास इसलिए किया क्योंकि एक अच्छे मानवीय मूल्य से ही एक अच्छे समाज और राष्ट्र का निर्माण हो सकता है। साहित्य संगीत और कल मानवीय जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसमें मानवीय मूल्य की खोज करने से हम समाज को आधुनिक समय में एक उच्च आदर्श पर ले जा सकते हैं तथा एक उत्तम समाज का निर्माण कर सकते हैं।

शोध का लाभ

- मानवीय मूल्य का अपना महत्व है एक अच्छा व्यक्ति है अच्छी चीजों की पहचान कर सकता है।
- जीवन में मानवीय मूल्य व्यक्ति को प्रभावित कर उसे उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन बनते हैं।
- नव्या मूल्य मानवीय चेतना के विकास के शक्तिशाली प्रेरक तत्व है।

प्रस्तुत शोध को निम्नलिखित प्रारूप में प्रस्तुत किया जाएगा।

प्रस्तावित अनुक्रमणिका

प्राक्कथन

कृतज्ञता ज्ञापन

प्रथम अध्याय: कवि तथा मानवीय मूल्यों का परिचय

क• डा अभिराज राजेन्द्र मिश्र का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

ख• मानवीय मूल्यों का स्वरूप एवं परिचय

द्वितीय अध्याय: महाकाव्यों में मानवीय मूल्यों का विश्लेषण

क• जानकीजीवनम् में मानवीय मूल्य

ख• वामनावतरणम् में मानवीय मूल्य

तृतीय अध्याय: प्रमुख गीतिकाव्यों/खंडकाव्यों में मानवीय मूल्यों का विश्लेषण

क• मृगांकदूतम् में मानवीय मूल्य

ख• चर्चरी में मानवीय मूल्य

ग• नवाष्टकमालिका में मानवीय मूल्य

चतुर्थ अध्याय: प्रमुख नाटकों में मानवीय मूल्यों का विश्लेषण

क• प्रमद्वरानाटिका में मानवीय मूल्य

ख• विद्योत्तमानाटिका में मानवीय मूल्य

ग• प्रशान्तराघवम् में मानवीय मूल्य

घ• लीलाभोजराजम् में मानवीय मूल्य

पंचम अध्याय: प्रमुख गद्य काव्य में मानवीय मूल्यों का विश्लेषण

क• शतपर्विका में वर्णित मानवीय मूल्य

ख•मानवीय मूल्यों का समाज में पड़ने वाला प्रभाव

उपसंहार

प्रस्तुत शोध प्रबंध के शीर्षक उपशीर्षक तथा अवान्तर बिंदुओं के निर्देश में आवश्यकता अनुसार संशोधन तथा परिवर्तन किया जा सकता है।

सहायक ग्रंथ सूची

1. जानकीजीवनम्, डॉ अभिराज रजेन्द्र मिश्र,वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद,1988
2. वामनावतरणम्, डॉ अभिराज राजेन्द्र मिश्र,अक्षयवट प्रकाशन इलाहाबाद,1994
3. आर्यान्योक्तिशतकम्, डॉ अभिराज राजेन्द्र मिश्र,वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद,1975
4. नवाष्टकमालिका, डॉ अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद,1976
5. पराम्बाशतकम्, डॉ अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद,1981
6. शताब्दीकाव्यम्, डॉ अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद,1987
7. अभिराजसप्तशती,डॉ अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद,1987
8. पंचकुल्या,डॉ अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद,1993
9. धर्मानन्दचरितम्,डॉ अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद,1992
10. अरण्यानी,डॉ अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद,1999

11. संस्कृतशतकम्,डॉ अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद,1999

12. करशूलनाथमाहात्म्यम्,डॉ अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद,1996

13. कस्मै देवाय हवइषआ विधेम,डॉ अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद,1996

14. मृगांकदूतम्, डॉ अभिराज राजेन्द्र मिश्र,सम्पूर्णानंद संस्कृत, विश्वविद्यालय, वाराणसी,2003

15. चर्चरी ,डॉ अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद,2004

निर्देशिका

प्रो॰ अर्चना कुमारी दुबे
स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग,
राँची विश्वविद्यालय ,राँची

शोधार्थी

संचिता मन्ना
स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची